'सुधार' किनके लिए?– कुलपति यूनिवर्सिटी को तहस–नहस करने पर आमादा

कुलपति क़िस्म-क़िस्म के 'सुधारों' को लागू करने की हड़बड़ी में हैं। उन्होंने मीडिया के सामने उनकी घोषणा कर दी है, पर शिक्षकों और विद्यार्थियों के नुमाइंदों के साथ उन पर विचार-विमर्श करने को तैयार नहीं हैं। अभी पिछले ही साल बिना समुचित विचार-विमर्श, प्रक्रिया और तैयारी को अंजाम दिए, उन्होंने सेमेस्टर प्रणाली लागू कर दी। अब उन्होंने 2013 से चारवर्षीय स्नातक कार्यक्रम लाने की घोषणा की है। बहुत जल्दबाज़ी में जनाब मेटा यूनिवर्सिटी और मेटा कॉलेज की संकल्पना को 22 और 23 जुलाई 2012 की ए.सी. और ई.सी. की बैठकों में बाक़ायदा पारित करा चुके हैं। चारवर्षीय स्नातक अमेरिका के उन कम्युनिटी कॉलेजों की तर्ज पर गढ़ा गया है जो एक्रेडिटेशन की रैंकिंग में सबसे निचली पायदान पर हैं। वाशिंगटन में जून में हुई भारत-अमेरिका उच्च शिक्षा वार्ता में कपिल सिब्बल ने जून के अंत तक 100 कम्युनिटी कॉलेज खोलने का वायदा किया! ये 'सुधार' सार्वजनिक पैसे से चलनेवाली उच्च शिक्षा को अवमूल्यित करने और मुनाफ़ाख़ोरी के लिए उच्च शिक्षा को बेचने की ख़ातिर विदेशी और निजी विश्वविद्यालयों के आने को प्रोत्साहित करने की योजना का हिस्सा हैं। संसद में लंबित उच्चशिक्षा-संबंधी छह विधेयकों का भी यही लक्ष्य है।

चारवर्षीय स्नातक क्यों? मेटा यूनिवर्सिटी और मेटा कॉलेज क्यों?

कुलपति का दावा है कि ये हमारे सामने अधिक विकल्प पेश करेंगे। हक़ीक़त क्या है? अनेक निकास बिंदुओं वाले चारवर्षीय स्नातक कार्यक्रम में विद्यार्थी चार साल के बाद ही ऑनर्स डिग्री हासिल कर पाएंगे। विद्यार्थियों की ख़ासी बड़ी संख्या दो और तीन साल के बाद कमतर मूल्य वाले डिप्लोमा या डिग्री के साथ बाहर हो चुकी होगी। मेटा कॉलेज के तहत विद्यार्थी एक कॉलेज में दो ही सेमेस्टर रह पाएंगे और बाक़ी के सेमेस्टरों के लिए दूसरे कॉलेजों में जाने पर मजबूर होंगे। मेटा यूनिवर्सिटी में विद्यार्थी को एक ही सेमेस्टर के अंतर्गत अलग-अलग विश्वविद्यालयों में जाना पड़ सकता है। ये 'सुधार' विद्यार्थियों के लिए फ़ायदेमंद कैसे हैं? आरक्षण कैसे लागू किए जाएंगे? इन्हें हड़बड़ी में पारित कराने के पीछे वजह क्या है?

क्या मिला हमें 'सुधारों' से अब तक?

हम ओ.बी.सी. विस्तारण का स्वागत करते हैं जिसने दिल्ली वि.वि. में विद्यार्थियों की संख्या में अच्छा-ख़ासा इज़ाफ़ा किया। हालांकि विद्यार्थी-संख्या की बढ़त को देखते हुए अधिक शिक्षकों की नियुक्ति और बुनियादी ढांचे के विकास के लिए फ़ंड दिया गया, पर शिक्षकों के 4000 नियमित पद ख़ाली हैं और बुनियादी ढांचे को विस्तृत-विकसित करने में दिल्ली वि.वि. नाकाम रहा है। आज हमारी कक्षाओं और प्रयोगशालाओं में उनकी क्षमता से ज़्यादा भीड़ है, कमरों की भयंकर कमी है, प्रयोगशालाओं में साधनों का ज़बर्दस्त अभाव है और बड़ी तादाद में शिक्षक छोटी अवधिवाली नियुक्तियों के आधार पर पढ़ा रहे हैं, जिनके सामने यह साफ़ नहीं है कि अगले सेमेस्टर में वे रोज़गारशुदा रह पाएंगे या नहीं।

इन सभी मसलों में कुलपति की कोई दिलचस्पी नहीं, उनकी दिलचस्पी सिर्फ़ 'सुधारों' को थोपने में है। सेमेस्टर प्रणाली शिक्षकों के विरोध के बावजूद थोपी गई थी। इसने ऑनर्स पाठ्यक्रमों की गंभीरता को कम कर दिया है। गहन अध्ययन की अब वहां कोई गुंजाइश नहीं। शिक्षक और विद्यार्थी सिलेबस को पूरा करने की हड़बड़ी में गर्क़ हैं और यह चीज़ों को गहराई से समझने-समझाने की क़ीमत पर ही हो रहा है। सिलेबस के इस दबाव ने खेल और पाठ्यक्रमेतर गतिविधियों के लिए समय ही नहीं रहने दिया है। पठन-सामग्री अपर्याप्त है, ख़ास तौर से हिंदी में और नेत्रहीनों के इस्तेमाल-योग्य फ़ार्मेट में। परीक्षाओं के दुगने बोझ के नीचे पूरी व्यवस्था लड़खड़ा गई है। पिछले सेमेस्टर के इम्तहानों के संचालन में अनगिनत गड़बड़ियां हुईं। ज़्यादातर पाठ्यक्रमों के परीक्षाफल अगस्त में ही निकल पाए। जनवरी 2012 में जो परीक्षाफल निकले, उनमें अंक मनमाने तरीके से बढ़ाए गए थे, ताकि यह भ्रम फैलाया जा सके कि सेमेस्टर प्रणाली अच्छा काम कर रही है। अलबत्ता, स्नातकोत्तर पाठ्यक्रमों में विद्यार्थियों के अनुतीर्ण होने की दर बढ़ी जिसने कइयों के भविष्य को अंधकारमय बना दिया। लिहाज़ा, विद्यार्थी इस चीज़ का तर्क समझने में नाकाम हैं कि कब उन्हें अच्छे अंक मिलते हैं और कब नहीं मिलते। पुनर्मूल्यांकन के लिए फ़ीस बढ़ा दी गई है और अगले साल से पुनर्मूल्यांकन की सहूलियत ही ख़त्म हो जाएगी।

क्या यही गुणवत्ता बढ़ाने और विद्यार्थियों के लिए विकल्प बढ़ाने का तरीक़ा है? वे इस उम्मीद में दिल्ली वि.वि. आते हैं कि उन्हें अच्छी शिक्षा मिलेगी जिससे अच्छे रोज़गार का रास्ता खुलेगा। कुलपति के 'सुधार' शिक्षा की गुणवत्ता और विद्यार्थियों की उम्मीदों के लिए ज़बर्दस्त ख़तरा हैं। हम अपील करते हैं कि शिक्षक और विद्यार्थी इसका पुरज़ोर विरोध करें।

शुक्रवार, 24 अगस्त को विरोध रैली में भाग लें

विवेकानंद मूर्ति, कला संकाय पर दिन के 12 बजे इकटठा हों

AIDSO	**AISA**	**AISF**	**CTF**	**DTF**	**FDS**	**JSM**
KYS	**LDTF**	**MSAD**	**SAMBHAVANA**		**SFI**	**YFSJ**